भाषा तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

इन्दु प्रसाद

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा बच्चे स्वयं से और दूसरों से बात करते हैं। शब्दों से ही वे अपने यथार्थ का सृजन तथा उसकी समझ बनाना शुरू करते हैं। सीखने की प्रक्रिया के लिए भाषा को समझने और उसे स्पष्ट तथा प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता हासिल करना आवश्यक है। भाषा केवल संवाद का ही साधन नहीं है - यह वह माध्यम भी है जिसके द्वारा हम अधिकांश ज्ञान हासिल करते हैं। यह एक ऐसी व्यवस्था है जो काफ़ी हद तक हमारे आसपास के यथार्थ को हमारे मन में निरूपित करने के लिए ढाँचों में व्यवस्थित करती है - यह हमारी पहचान को नाना प्रकार से चिह्नित करती है, और समाज में एक स्थान भी दिलाती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) 2005, मनुष्यों में भाषा की नैसर्गिक क्षमता होने की धारणा का समर्थन करती है। बच्चे अपनी भाषा या भाषाओं में वैचारिक सम्प्रेषण की योग्यता लेकर ही स्कूल आते हैं। वे स्कूल में हज़ारों शब्दों के साथ प्रवेश करते हैं। उन नियमों पर भी उनका नियंत्रण होता है जो ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों और सम्भाषण के स्तर पर भाषा के समृद्ध और जटिल ढाँचे को अनुशासित करते हैं। एन.सी.एफ. के अनुसार एक सृजनशील भाषा-शिक्षक द्वारा बहुभाषावाद का उपयोग एक संसाधन के रूप में कक्षा की शैक्षणिक योजना बनाने और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किया जाना बेहद ज़रूरी है। यह न केवल एक सहज उपलब्ध साधन का श्रेष्ठ उपयोग है, बल्कि यह सुनिश्चित करने का तरीक़ा भी है कि प्रत्येक बच्चा अपने को कक्षा में सुरक्षित और स्वीकृत महसूस करे। साथ ही भाषायी पृष्ठभूमि के कारण कोई भी पिछड़ने न पाए।

एनसीएफ का कहना है कि बुनियादी भाषायी कौशल प्रासंगिक विशेषताओं की दृष्टि से समृद्ध और संज्ञानात्मक अपेक्षाओं से रहित परिस्थितियों में व्यवहार करने के लिए पर्याप्त होते हैं, जैसे कि हमउम्र साथियों के साथ बातचीत करना। दूसरी ओर, प्रासंगिक विशेषताओं की दृष्टि से दरिद्र और ऐसी परिस्थितियाँ जिनमें संज्ञानात्मक प्रयास अपेक्षित हो, जैसे कि किसी अमूर्त मुद्दे पर निबन्ध लिखना - में विकसित स्तर के कौशलों की आवश्यकता होती है।

अतः प्रथम भाषा की शिक्षा का लक्ष्य कक्षा में धीरे-धीरे बच्चों की संवादात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के विकास को सहारा देकर इन कौशलों को माँजना है। शुरुआती प्राथमिक स्तर पर, बच्चों की भाषाओं को वे जैसी हों वैसी ही स्वीकार करते हुए उन्हें सुधारने का काम कम-से-कम किया जाना चाहिए। कक्षा 3 में आने के बाद सीखने, और उच्च स्तरीय संवादात्मक कौशलों तथा विवेचनात्मक सोच विकसित करने के लिए वक्तृता और साक्षरता हमारे उपकरण होंगे। कक्षा 4 तक यदि बच्चे को समृद्ध और रुचिकर परिवेश उपलब्ध करा दिया जाए तो वह स्वयं सही वर्तनी व्यवस्था के मानक रूप और उसके नियमों को हासिल कर लेगा। लेकिन यह

भी बेहद ज़रूरी है कि इस दौरान बच्चे की अपनी स्वाभाविक भाषा (या भाषाओं) को सराहने और उसका सम्मान करने का ध्यान रखा जाए। इस बात को भी स्वीकारना चाहिए कि त्रुटियाँ, सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य अंग होती हैं। बच्चे तभी अपने को सुधारते हैं जब वे ऐसा करने के लिए भीतर से राज़ी होते हैं। इसलिए त्रुटियों और 'कठिन बिन्दुओं' पर ध्यान केन्द्रित करने से कहीं ज़्यादा अच्छा यह होगा कि बच्चों को सुबोध, रोचक और चुनौतीपूर्ण जानकारियाँ तथा सामग्री प्रदान करने पर समय लगाया जाए।

एनसीएफ के अनुसार भाषा की शिक्षा सिर्फ भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होती। कोई भी विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित की कक्षा स्वतः ही भाषा की कक्षा भी होती है। किसी विषय को सीखने का अर्थ है उसकी शब्दावली सीखना, अवधारणाओं को समझना और उनके बारे में विवेचनात्मक चर्चा करना या लिखना। साथ-ही-साथ भाषा की कक्षा कुछ अनोखे अवसर प्रदान करती है। कहानियाँ, कविताएँ, गीत और नाटक बच्चों को उनकी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ते हैं, और उन्हें अपने खुद के अनुभवों को समझने तथा दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाने में मदद करते हैं। स्पष्ट और अक्सर उबाऊ, व्याकरण के पाठों की तुलना में बच्चे ऐसी गतिविधियों से बिना किसी प्रयास के कहीं अधिक व्याकरण हासिल कर लेते हैं।

भरपूर जानकारी वाले संवादात्मक वातावरण भाषा सीखने की बुनियादी शर्त हैं। बच्चों को प्रदान की जा रही जानकारियों में पाठ्यपुस्तकें, सीखने वालों के द्वारा चुनी गई पाठ्यसामग्री और कक्षा का पुस्तकालय जिसमें विविध प्रकार की किताबें हों; मुद्रित (उदाहरण के लिए नन्हें सीखने वालों के लिए बड़े आकार की पुस्तकें); एक से अधिक भाषाओं में समानान्तर किताबें और सामग्री; संचार माध्यमों का सहयोग (सीखने वालों के लिए पत्रिकाएँ/ समाचारपत्रों के स्तम्भ, और रेडियो/ऑडियो कैसेट); और "प्रामाणिक" सामग्री।

भाषा ज्ञान के मूल्यांकन के सम्बन्ध में एनसीएफ का कहना है कि इसका किसी विशेष निर्धारित पाठ्यक्रम में उपलब्धियों से जुड़ा होना ज़रूरी नहीं है, इसके बजाय उसका उद्देश्य भाषा की दक्षता का आकलन करना होना चाहिए। सतत मूल्यांकन में सीखने वाले की प्रगति का लेखाजोखा भी रखा जा सकता है। भाषा में दक्षता के लिए राष्ट्रीय कसौटियाँ विकसित किए जाने की ज़रूरत है। एनसीएफ दसवीं कक्षा के स्तर पर विद्यार्थियों के फेल होने का एक प्रमुख कारण (गणित के साथ-साथ) अँग्रेज़ी के होने के पर भी विमर्श करता है।

संवाद में भागीदारी और अभिव्यक्ति कौशल जैसे भाषायी पहलुओं के बजाय अधिकांश भाषा-शिक्षक बोलना सिखाने के प्रशिक्षण को शुद्धता से जोड़ते हैं। एनसीएफ इस तथ्य पर भी ग़ौर करता है कि, "हमारी व्यवस्था में कक्षा में बात करने को नापसन्द किया जाता है, और शिक्षक की बहुत-सी ऊर्जा बच्चों को शान्त रखने में या उनके उच्चारणों को सही करवाने में खर्च होती है। यदि शिक्षक बच्चे की वाचालता को एक व्यवधान की तरह देखने के बजाय उसे एक संसाधन की तरह देखें तो इससे प्रतिरोध और नियन्त्रण के दुष्चक्र को अभिव्यक्ति और प्रतिउत्तर के चक्र में बदलने का मौका मिलेगा। बातचीत को संसाधन की तरह कैसे उपयोग किया जाए,

इस बारे में ज्ञान का विशाल भण्डार उपलब्ध है। शिक्षकों के सेवापूर्व तथा सेवाकालिक प्रशिक्षणों में उन्हें उस ज्ञान से अवगत कराया जाना चाहिए।"

सीखने-सिखाने की सामग्री और गतिविधियाँ ऐसी होना चाहिए जो बच्चों के बीच में छोटे-छोटे सामूहिक वार्तालापों को प्रोत्साहित करें। चीजों को तुलनात्मक तथा सापेक्षिक ढंग से देखने, सोच-विचार करने और स्मरण करने, अनुमान लगाने और चुनौती देने, आँकने और मूल्यांकन करने की उनकी क्षमताओं को पोषित करें। श्रवणीय संसाधन और गतिविधियाँ ऐसी हों जो विद्यार्थियों में ध्यान देने, दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को सराहने, कथन के प्रवाह से जुड़े रहने और जो कहा जा रहा है उसके तात्पर्य के बारे में लचीली परिकल्पनाएँ गढ़ने की क्षमताओं को विकसित करने पर केन्द्रित हों।

एनसीएफ की दृष्टि में कहानी कहना न केवल स्कूल-पूर्व की शिक्षा के लिए उपयुक्त है, बल्कि बाद में भी इसका महत्त्व बना रहता है। मुँह से बोले जाने वाले विवरणात्मक सम्भाषण की तरह कहानियाँ तर्कपूर्ण समझ की नींव रखती हैं। साथ ही वे कल्पनाशक्ति को विस्तार देती हैं और कथापात्रों के माध्यम से, व्यक्ति की उसके जीवन से बहुत दूर की परिस्थितियों में परोक्ष भागीदारी करने की क्षमता को बढ़ाती हैं।

पढ़ने को भाषा शिक्षण के एक केन्द्रीय क्षेत्र की तरह तो सहज ही स्वीकार कर लिया जाता है। परन्तु स्कूलों के पाठ्यक्रम में जानकारी ग्रहण करने और उसे याद करने का इतना अधिक बोझ लाद दिया जाता है कि बच्चों को सिर्फ आनन्द के लिए पढ़ने का मौका ही नहीं मिलता। हर व्यक्ति को उसके मानसिक रुझान के अनुरूप पढ़ने के अवसर हर स्तर पर सुलभ कराए जाना चाहिए ताकि पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा मिले। शिक्षकों को स्वंय ऐसी संस्कृति का वाहक बनकर उदाहरण पेश करना चाहिए।

एनसीएफ इस ओर भी ध्यान खींचता है कि अधिकांश शिक्षक बच्चों के शुद्ध लिखने पर ही ज़ोर देते हैं। उनके अपने विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति को बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं माना जाता। जिस प्रकार कच्ची उम्र में उच्चारण का अनुशासन लाद देने से बच्चों का अपनी बोली में मुक्त भाव से बात करने का उत्साह घुटकर रह जाता है, उसी प्रकार यांत्रिक ढंग से शुद्ध लेखन का आग्रह अपने विचार व्यक्त करने और सम्प्रेषित करने के लिए लेखन का उपयोग करने की आकांक्षा को अवरुद्ध कर देता है। शिक्षकों को इस बात के लिए प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है कि वे लेखन को उसी दायरे की विधा मानें जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति आती है। वे उसे एक दफ़्तरी कौशल की तरह देखना बन्द करें। प्राथमिक वर्षों के दौरान बात करने, सुनने और पढ़ने से जुड़ी संवेदन शक्तियों के साथ ही लिखने की क्षमताओं को भी समेकित ढंग से विकसित किया जाना चाहिए। स्कूली शिक्षा के माध्यमिक और उच्च स्तर पर, कौशल विकसित करने के प्रशिक्षण अभ्यास की तरह, विषयों के नोट्स बनाने पर समुचित ध्यान दिया जाना चाहिए। ब्लैकबोर्ड, पाठ्यपुस्तकों या कुंजियों से नक़ल टीपने की प्रवृत्ति को काफ़ी हद तक दूर करने में इससे मदद मिलेगी। पत्र और निबन्ध लेखन जैसे कार्यों में घिसी-

पिटी परिपाटी को तोड़ना भी ज़रूरी है, ताकि कल्पनाशक्ति और मौलिकता को शिक्षा में ज़्यादा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर दिया जा सके।

बच्चे पढ़ना क्यों नहीं सीखते?

- अध्यापकों में अध्यापनकला के बुनियादी कौशलों (यह समझना कि सीखने वाला मानसिक रूप से कहाँ है, समझाना, उपयुक्त प्रश्न पूछना) तथा पढ़ना सीखने की प्रक्रियाओं - जैसे कि शब्दों को पहचानना और अक्षरों तथा ध्वनियों में तालमेल बिठाना - से लेकर ऊपर से नीचे की ओर घटने वाली प्रक्रियाओं - जैसे पूरे-पूरे शब्दों को पहचानना और पाठ्यांश का अर्थ निकालना - की समझ का अभाव होता है। उनमें अक्सर कक्षा-प्रबन्धन के कौशलों की भी कमी होती है। उनमें कल्पनाशील पहल और कुशल अभिव्यक्ति के बजाय केवल ग़लतियों या कठिन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित करने की प्रवृत्ति रहती है।
- सेवापूर्व प्रशिक्षण शिक्षकों को पढ़ना सिखाने की अध्यापनकला की पर्याप्त तैयारी नहीं करवाते और न ही सेवाकालिक प्रशिक्षण इस मुद्दे पर ध्यान देते हैं।
- पाठ्यपुस्तकें कामचलाऊ तदर्थ ढंग से लिखी जाती हैं और उनमें पढ़ना सिखाने की किसी सुसंगत रणनीति का पालन करने का प्रयास नहीं किया जाता।
- सुविधाहीन पृष्ठभूमियों से आने वाले बच्चों विशेषकर पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा अपनाए जाने का अहसास नहीं होता और वे पाठ्यपुस्तकों से सम्बन्ध नहीं जोड़ पाते।

पढ़ना प्रारम्भ करने के लिए एक व्यावहारिक दृष्टिकोण

- कक्षा में संकेतचिह्नों, चार्टों और कार्यों की व्यवस्था सम्बन्धी सूचनाओं आदि को प्रदर्शित करके मुद्रित-सामग्री से भरपूर वातावरण प्रदान किए जाने की ज़रूरत है, जिससे अक्षरों तथा ध्वनियों के पारस्परिक सम्बन्ध को सिखाने के अलावा लिखित चिन्हों को अक्षरों की तरह पहचानने की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिले।
- कक्षा की पढ़ाई में ऐसी कल्पनाशील सामग्री का समावेश किए जाने की ज़रूरत है जो किसी योग्य वाचक के द्वारा उपयुक्त भाव-भंगिमाओं सहित नाटकीय ढंग से पढ़ी जाए।
- बच्चों से उनके अनुभवों को लिखवाना और फिर लिखे गए विवरण को पढ़वाना।
- अतिरिक्त सामग्री जैसे कहानियों, कविताओं आदि का वाचन।
- पहली पीढ़ी के स्कूल जाने वालों को स्वयं अपनी पाठ्यसामग्री निर्मित करने, और अपनी पसन्द से चुनी गई पाठ्यसामग्री को कक्षा में शामिल करने के अवसर ज़रूर दिए जाना चाहिए।

- एनसीएफ 2005 से

इन्दु प्रसाद अजीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, बेंगलूरु में एकेडमिक्स एवं पैडागॉजी प्रमुख हैं। इसके पहले उन्होंने तमिलनाडु और कर्नाटक के विशेष/सर्वसुलभ स्कूलों में 15 वर्ष से भी अधिक समय तक अध्यापिका की तरह विभिन्न प्रकार की तंत्रिका चुनौतियों से जूझ रहे बच्चों के साथ काम किया है। उनसे indu@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

यह *Learning Curve, Issue XIII (Language Learning)* अक्टूबर, 2009 में प्रकाशित लेख Language and the National Curriculum Framework का हिन्दी अनुवाद है।

अनुवाद : सत्येन्द्र त्रिपाठी **पुनरीक्षण एवं सम्पादन :** राजेश उत्साही